नकलू नडलू बुरे फँसे



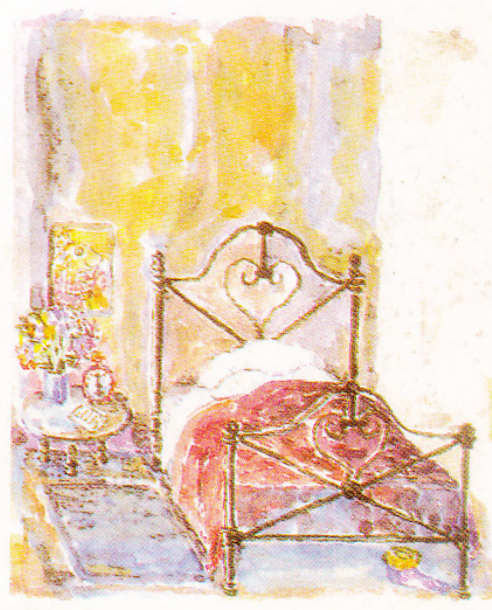


नैंसी हेडाक









नकलू नडलू बुरे फँसे

चित्रकार व लेखक : नैंसी हेडाक
अनुवाद : लाल्टू

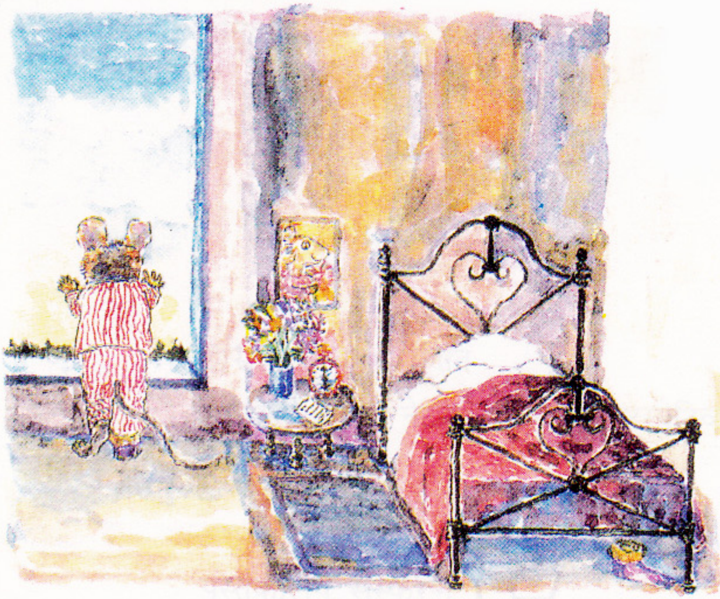
पुस्तकालय संस्करण
प्रकाशन वर्ष : मई 1998

मूल्य : 45 रुपये

प्रकाशक : साउथ एशियन नेटवर्क फॉर आल्टरनेटिव मीडिया (**सनम**),
249-ई, रामा मार्केट, मुनीरका गाँव,
नई दिल्ली 110 067

Given by Laltu/Karen
20 Aug 1998
Chandigarh





एक समय की बात है। एक था जंगल। जंगल में एक जगह एक बड़ा मैदान था। उस मैदान के पास नकलू नडलू नाम के एक चूहे ने घर बनाया। पहले वह अपने माता पिता के साथ रहता था। उनको पुराने घर में छोड़कर अब वह नए मकान में रहने लगा। हालाँकि उसकी उम्र कम थी, फिर भी उसे एक बढ़िया मज़बूत मकान बनाना आता था।

एक दिन सूरज उगने से पहले ही वह उठ पड़ा और दौड़कर खिड़की पर गया। वह एक ही चप्पल पहने हुए था–दूसरी चप्पल पर अनजाने में उसने यूँ लत्ती मारी कि वह फिसलकर खटिए के नीचे बहुत दूर चली गई और उसने ढूँढने की कोई कोशिश न की। उसने खिड़की से बाहर अपना पंजा निकाला।

"बढ़िया ! आज बारिश नहीं हो रही !" मन ही मन उसने कहा, "अथलू बहन और



मैं नाले के पास पिकनिक करेंगे।" अथलू उसकी चचेरी बहन थी।

अथलू को दोपहर के बाद पहुँचना था। फिर भी नकलू का चेहरा खुशी से चमक रहा था। उसके मन में एक बार भी यह शंका न हुई कि कभी कभी जमीन पर रेंगते हुए एक चूहे की जिंदगी में एक दिन में भी कई दुर्घटनाएँ हो सकती हैं।

"अब मैं और सो नहीं पाऊँगा," नकलू ने सोचा, "अब गा ही चुका हूँ तो पिकनिक के लिए बनाया अखरोट केक चख कर देखूँ।"

उसने रसोई में आलमारी खोली। वहाँ पिछली रात का पिकनिक के लिए बनाया सारा खाना पड़ा था।



"देखते ही मुँह में पानी भर आया! बहुत सारा बना रखा है !" उसे लगा जैसे अथलू बहन कह रही हो।

जैसे ही उसने अखरोट-केक निकालने की कोशिश की, सामने पड़ी फूलों से बने शहद की शीशी गिर गई। हालाँकि नकलू ने खूब उछल कूद कर शीशी को पकड़ने की कोशिश की, पर शीशी फर्श पर गिरी और चकनाचूर हो गई।

अपना नंगा पैर हवा में लटकाए, काँच के टुकड़ों और शहद के ढेर पर, नकलू चप्पल पहने



हुए दूसरे पैर पर क्षण भर खड़ा रहा। उसे अब यह अहसास हुआ कि नींद न आई तो भी **काश** वह बिस्तर पर ही लेटा रहता !

एक टाँग पर उछल उछल कर उसने झाड़न, गर्द इकट्ठा करने वाली बेलची, पोछा और पानी की बाल्टी लाने की कोशिश की। पर वह फिसल गया और काँच के एक टुकड़े से उसके पैर की एक उँगली कट गई।

घंटे भर बाद फर्श से काँच के टुकड़े हट चुके थे, शहद के धब्बे मिट चुके थे, पैर की उँगली पर पट्टी चढ़ी हुई थी और नकलू दरवाजे के बाहर बैठ धूप सेंक रहा था। सामने से हाथों में बेरों से भरी टोकरी लिए उछलती हुई श्रीमती चूंचुपरचूं आती दिखीं।



"बड़ा बढ़िया दिन है, क्यों?" श्रीमती चूंचुपरचूं ने कहा।

"होगा, कुछ लोगों के लिए," नकलू ने श्रीमती चूंचुपरचूं को अपने साथ हुई दुर्घटना के बारे में बतलाया।

"कोई बात नहीं," श्रीमती चूंचुपरचूं ने उसके पैर की ओर सहानुभूति से देखा और कहा, " एक बार मेरे भतीजे की पूरी टाँग पर पट्टी चढ़ानी पड़ी थी।



उसने घोंसला से गर्दन निकाली और एक ओर अधिक झुका तो फिर गिरता ही चला, गिरता ही चला। उसने अभी तक पंख पसारना सीखा ही नहीं था। उसके पंख फड़फड़ाते रहे, पर वह जमीन पर आ गिरा। यह तो अच्छा रहा कि वह नदी में नहीं गिरा।"



श्रीमती चूंचुपरचूं के जाने के बाद नकलू ने सोचा," पिकनिक के लिए एक ताजा मछली पकड़ी जाए। मछली खाने का अलग ही मजा है।" उसने मछली पकड़ने की लग्गी निकाली और लड़खड़ाता हुआ वह पुल तक पहुँचा।

नकलू ने पानी में डोरी डाली और पुल के घेरे पर डंडी टिकाई। नीचे बहते हुए पानी की लहरों पर धूप की उछल कूद देखते हुए वह मछली के फँसने का इंतजार करने लगा। उसे शहद के गिरने का और अपनी घायल पैर की उँगली का कोई ख्याल न रहा। यहाँ तक कि डोरी पर नजर रखना भी वह भूल गया। धूप के हजारों टुकड़े खुशी से बार बार उछल रहे थे और अचानक एक मछली उछली।

"वापस आ !" नकलू चीखा।

वह घेरे पर झुका। पर वह बहुत ज्यादा झुक पड़ा। उसने चीं चीं चीख निकाली। वह नीचे



नीचे गिरता चला गया। पानी बर्फ सा ठंडा था। वह ठंडे पानी में डूबने लगा। कुछ देर बाद हालाँकि उसे लगा जैसे घंटे बीत गए थे – उसने पानी से अपना सिर निकाला। पानी उसे बहा ले जा रहा था। कई बार वह भँवर में चकराया, लहरों की बौछारें उस पर पड़ती रहीं, पर उसने अपनी नाक ऊपर की ओर रखी। अपनी नन्हीं सी पूरी ताकत लगाकर वह तैरते हुए थोड़ी सी दूर पहुँचा, जहाँ लहरें शांत थीं। इसके बाद वह आसानी से किनारे पहुँचा। ठंड से काँपते हुए वह किनारे पर लेटा रहा।

एक कछुए ने पानी से अपना सिर निकाला ।

"सलाम," कछुए ने कहा, "कैसा रहा तैरना? मैं हर सुबह तैरा करता हूँ। तुम्हें भी शौक है क्या?"

"मुझे तैरने में कोई मजा नहीं आता," नकलू बोला। उसने कछुए को बतलाया कि किस तरह वह पुल से गिरा और उसके पहले उसके पैर की उँगली कैसे कटी और सुबह सुबह उसका शहद कैसे बर्बाद हो गया था।



"और मेरी पट्टी भी उखड़ गई," नकलू ने कहा, "शायद पानी



में नीचे की ओर बह गई।"

"इन बुरी घटनाओं को भूल जाओ," कछुआ बोला, "ये छोटी बातें हैं। मेरी एक बहन–मबलू – वह तो धार में बह ही गई। वह एक पत्थर पर लेटी थी और अचानक बाढ़ आई तो फिर उसका पता ही न चला। तुम तो अभी भी **होश** में हो, हो न ?"

"हाँ," नकलू बोला। उसे मैदान के पार पुल के ठीक दूसरी ओर अपने मकान का ख्याल आया। उसने सोचा कि वह कछुए को अपने घर के बारे में बतलाए। पर जब उसने फिर पानी की ओर देखा तो कछुआ उतनी ही जल्दी जा चुका था, जितनी जल्दी मबलू बह गई थी।

नकलू नदी किनारे धार की उल्टी ओर चलते हुए पुल की दूसरी ओर पहुँचा। उसे मैदान की दूसरी ओर अपना मकान दिखा। "कछुआ ठीक कह रहा था," उसने सोचा, "छोटी छोटी बातें क्यों याद रखनी!"

अचानक उसे पके बीजों वाला सफेद कपास जैसा एक घास का फूल दिखा।

"घास-फूल का गुब्बारा," नकलू चीखा।

उसने सावधानी से नर्म गोले को डंठल से अलग किया। कुतर कुतर कर भारी हिस्सों को निकाल फेंका।

इसके बाद उसने उसे हवा में उछाला। हवा में बहता हुआ वह दूर तक चला गया।

उसने गोले का पीछा किया, फिर उस पर उँगली मारी, फिर पीछा किया, फिर उछाला, फिर पीछे दौड़ा, फिर उछाला, फिर पीछे दौड़ा, फिर उछाला।

10



दो एक बार उसकी एक ही फूँक पर गोला ऊपर उड़ गया। वह लगातार दौड़ता रहा और एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ वह पहले कभी न गया था।

मैदान में और भी घास-फूल के गुब्बारे थे, पर उसका अपना गोला उसे सबसे बढ़िया लगा। उसे लगा जैसे वह गोला कोई नर्म सा चूहे का बच्चा था।

थोड़ी देर बाद उसने देखा कि उसका बच्चा एक ओर अधिक दब गया था। उसने ध्यान से देखा। अधिकतर बीज निकलकर उड़ चुके थे। अब तो वह बहुत ही छोटा सा लग रहा था। उसके एक फूँक मारते ही और कई बीज अपनी सफेद रोएँदार छतरियों पर उड़ने लगे। उसे उनको उड़ते देखना बहुत अच्छा लग रहा था और उसने और भी कई बीजों को फूँक मार कर उड़ाया।

नकलू मुँह ऊपर की ओर कर लेट गया और उसने आसमान की ओर देखा। उसे अपनी बहन अथलू के जल्दी आ पहुँचने का ख्याल आया।



"मैं कितना खुश हूँ," उसने सोचा।

अचानक उसे लगा कि घास में एक अलग किस्म की महक थी। आस पास पड़े पत्थर भी अनजान किस्म के थे। जमीन से भी एक अजीब महक आ रही थी। उसे



बहते पानी की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ी। घास-फूल के गुब्बारों वाला मैदान भी नहीं दिखा। आम तौर पर अपने मकान से थोड़ी दूर पर दिखने वाली गाय भी उसे न दिखी।

वह इधर उधर दौड़ता रहा। उसने हर कोना सूँघा और चारों ओर देखा।

उसका मकान कहाँ गया? अगर अथलू बहन आए और उसे ढूँढ न पाए तो?

उसने सोचा, "मैं भटक गया हूँ!"

उसे याद आया कि कछुए ने किस तरह मबलू के बारे में कहा था, "फिर उसका पता ही न चला।" उसने आसमान की ओर देखा। शोर मचाता हुआ पक्षियों का एक झुंड उड़ रहा था। उनके जाने के बाद इतनी शांति हो गई जितनी कि नकलू ने पहले कभी न पाई थी।

"मैं **भटक** गया हूँ। वह जोर से रो पड़ा।

"रोओ मत, खुश रहो," नकलू की ओर उछलती हुई एक पीली चिड़िया ने कहा।

"मुझे मेरा घर नहीं मिल रहा, मैं कैसे खुश रहूँ!" नकलू ने रोते हुए कहा। उसे यह देखकर हताशा हुई कि वह चिड़िया श्रीमती चूंचुपरचूं या उसके पड़ोसी चिड़ियों में से न थी।

12

यहाँ तक कि उसने ऐसी चिड़िया पहले कभी देखी तक न थी। थोड़ी देर तक तो उस छोटी चिड़िया के आने से नकलू को और भी अधिक अकेलेपन का अहसास हुआ।"



"तो मैं तुम्हारी मदद करूँगी," चिड़िया ने कहा, "मेरी नजर बहुत अच्छी है। अगर मैं उड़कर ऊपर पहुँचूँ (उसने आसमान की ओर संकेत किया) और चारों ओर देखूँ तो जरूर तुम्हारा मकान दिख जाएगा। तुम्हारा मकान देखने में कैसा है?"

"वह लकड़ियों से बना है और उसके ऊपर पत्थरों की एक चिमनी है और वहाँ एक बाग है और लेटर बाक्स पर नकलू नडलू लिखा है और पिछवाड़े में एक झूला है और ... "

"बगीचे में क्या है?"

"मटर, बीन, मकई, लौकी, बंदगोभी और जंगली मीठे बेर के पौधे हैं।"

"अच्छा, वो वाला मकान", पीली चिड़िया ने कहा और वह एक बड़ा चक्कर लगाकर उड़ने लगी। कुछ मिनटों के बाद वह वापस आई और बोली, "दिख गया।"

"तुमने देखा ! किस ओर? कृपया जल्दी मुझे दिखाओ !" नकलू ने रोकर कहा।

फिर वह चिड़िया उड़ चली, बीच बीच में छोटे चक्कर लगाती ताकि नकलू पीछे छूट न जाए।

धीरे धीरे घास से जानी पहचानी महक आने लगी। उसे कुछ ऐसे घास-फूल के गुब्बारे दिखे, जैसे उसने पहले कभी देखे थे। उसे एक पहचानी शक्ल का पत्थर दिखा। पंजों के

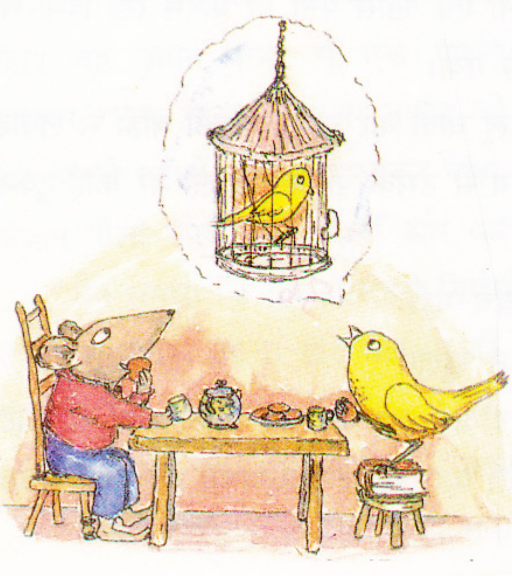
दागों से भी पहचानी महक आ रही थी। एक अंधेरी गुफा से निकलती सी महक आई–उसे याद आया कि एक बार उस गुफा में वह छिपा था। पानी के सोते की आवाज उसे सुनाई दी। दूर मैदान में खड़ी गाय उसे दिखी।

ओह, अपना घर फिर से देखकर उसे कितनी खुशी मिली!

उसने पीली चिड़िया से बार बार कहा कि वह उसके घर में आए और थोड़ी देर बैठे। वह चिड़िया अंदर आई। उन्होंने थोड़ी देर बातचीत की, चाय पी और सूर्यमुखी फूल के बीजों से बने नमकीन बिस्किट खाए।

नकलू नेपीली चिड़िया को बतलाया कि किस तरह राह भूल जाने से पहले वह पुल से नीचे गिरा और उसके पैर की उँगली कैसे कटी और कैसे शहद बर्बाद हो गया था।

"सचमुच बुरी गुजरी तुम्हारे साथ, खासकर ऐसे एक दिन, जब तुम अपनी अथलू बहन के साथ पिकनिक मनाना चाहते थे," पीली चिड़िया ने कहा, "पर मेरी एक दोस्त है जो तुमसे कहीं अधिक बदकिस्मत है।"



"कैसे?" नकलू ने नम्रता से पूछा।

"अरे वह उड़ ही नहीं सकती। उसको किसी ने पकड़ लिया। और पता है, अब वह पिंजड़े में बंद है। उसे जिंदगी भर वहीं रहना पड़ेगा।"

"और वह खाना क्या खाती है?" नकलू ने नमकीन बिस्किट चबाते हुए पूछा।

"वैसे तो उसके लिए हमेशा एक थाली में बढ़िया बीज और एक बाटी में पानी रखे रहते हैं। पर मजा जहाँ मर्जी आ जा सकने में



है–अपने पंख पसारो और दूर दूर तक हवा में बहते जाओ। वह तो कैद में है और कभी नहीं इस तरह उड़ सकती।"

पीली चिड़िया के चले जाने के बाद नकलू ने सोचा, "अथलू बहन को अलाव के पास बैठने में मजा आएगा। जरा और लकड़ियाँ ले आते हैं।"

तो वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ उसे मालूम था कि लंबे समय तक जलने वाली और मीठी मीठी सुगंध वाली लकड़ियाँ मिलती हैं। वहाँ से उसने काफी सारी लंबी छड़ियाँ लीं और घर वापस चला।

उसे पता ही नहीं चला कि उसने धातु की बनी एक खास पत्ती पर कदम रख दिया था। **धड़ाम**–दरवाजा एक झटके के साथ बंद हो गया।

इतने जोर से धड़ाम की आवाज आई कि नकलू चौक कर कूदा। उसकी बाँहों से लकड़ी के टुकड़े उछल कर इधर उधर गिर गए। (सौभाग्य से उसके पैर की उँगली पर कोई टुकड़ा नहीं गिरा।)

"अरे! यह तो **जाल** है।" उसकी साँस खिंच गई।

वह दरवाजे पर खूब उछलता रहा, पर वह न खुला।

वह पिंजड़े में चारों ओर दौड़ता रहा। उसने दीवारों को धकेला, उनको दाँतों से काटा। पिंजड़ा बहुत ही मजबूत किस्म के तार से बना था। वह तार मोड़ न पाया। वह दाँतों से एक हल्का सा दाग भर खींच पाया।



उसे पीली चिड़िया के अपनी दोस्त के बारे में बतलाए शब्द याद आए, "उसे जिंदगी भर वहीं रहना पड़ेगा।"

और उसने गुस्से में सोचा, "**यहाँ** तो कोई बढ़िया बीजों वाली थाली या पानी भरी बाटी तक नहीं है।"

थोड़ी देर बाद हाथ में एक थैला लिए एक बूढ़ा आदमी आया। यह जाल उसी ने लगाया था।

वह बेचारा एक बहुत ही बूढ़ा आदमी था, जो अकेलापन महसूस करता था। वह जंगल के पास के गाँव में एक धर्मशाला में रहता था। बातचीत करने के लिए वह अपने कमरे में एक पालतू जानवर रखना चाहता था। पर नकलू को तो यह मालूम न था। उस बूढ़े आदमी ने पिंजड़े को अपनी आँखों के करीब लाकर देखा, ताकि वह नकलू को देख सके। नकलू ने उसकी बेजान नीली पीली आँखें देखीं और वह डर से काँपने लगा।

"मैंने समझा कि एक गिलहरी मिलेगी," उस बूढ़े आदमी ने दया के स्वर में कहा, "पर तू तो एक चूहा ठहरा। खैर चल, तू ही मेरे साथ घर चल। शायद तेरे साथ ही दोस्ती पट जाएगी।"

"मुझे जाने दो। मुझे जाने दो।" नकलू चीखा।

"मैं तेरी देखभाल करूँगा। बहुत सारा खाना दूँगा। जंगली जानवरों से तुझे बचाऊँगा। और



हम दोनों हर शाम गप मारेंगे," उस बूढ़े आदमी ने कहा।

"मेरा घर बहुत सुरक्षित और बढ़िया है। मेरे पास बहुत सारी खाने की चीजें हैं। मेरी चचेरी बहन अथलू शाम को आने वाली है। हो सकता है-वह पहुँच ही गई हो। मुझे जाने दो। मुझे जाने दो।" नकलू फिर चीखा।

पर उस बहुत बूढ़े आदमी ने चूहों की चीं चीं बोली सीखी न थी। उसने पिंजड़े सहित नकलू को थैले में डाला। (धर्मशाला में पालतू जानवर ले जाना मना था)।

और वह बहुत बूढ़ा आदमी धीरे धीरे अपने घर को चला। उसने थैला सावधानी से पकड़ा ताकि नकलू कहीं अनचाहे ही अधिक परेशान न हो जाए।

घर पहुँचकर उस बूढ़े आदमी ने नकलू सहित पिंजड़े को खिड़की के किनारे रखा। उसने किसमिस वाले बिस्किट के टुकड़े पिंजड़े में डाले और घोंसला बनाने के लिए अपने तकिए से निकाल कर रुई के फाहे भी पिंजड़े में डाले। एक ढक्कन में पानी भरकर उसने पिंजड़े में रखा। नकलू की आँखों से आँसू की एक बूँद गिरी। ढक्कन में पानी में टकराते ही आँसू की बूँद धूप में चमकी, पर बूढ़े आदमी ने वह देखा नहीं। फिर वह बूढ़ा आदमी अपनी कुर्सी में बैठा, ताकि वह नकलू को देख सके, पर उसे नींद आ गई।

"चीं पीं, चीं पीं।"

"कौन है?" नकलू चीखा।

"मैं, मैं हूँ।"



नकलू ने पिंजड़े के बाहर झाँका तो देखा कि श्रीमती शहतूत वहाँ खड़ी थीं। श्रीमती शहतूत और उनका परिवार कभी नकलू के घर के पास ही रहते थे, पर वे लंबे समय से वहाँ से चले गए थे और अब घरेलू चूहे बन गए थे।

"श्रीमती शहतूत! आपको देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है," नकलू बोला, "कृपया मुझे इस पिंजड़े से बाहर निकालिए।"

"मैं कोशिश करती हूँ।"

"दरवाजा एक स्प्रिंग से बंद है।" नकलू बोला।

"मैं अभी आई," श्रीमती शहतूत बोलीं।

कुछ ही मिनटों बाद श्रीमती शहतूत अपने पति श्री शहतूत और अपने सात बच्चों के साथ वापस आईं। वे सब अपने पैरों की उँगलियों पर चलते आए, ताकि कुर्सी पर सोया बूढ़ा आदमी जग न जाए।

फिर शहतूत परिवार के सब ने मिलकर पिंजड़े के दरवाजे को सख्ती से पकड़ा और खींचा, खूब खींचा और उसे ऊपर की ओर उठाया। एक दूसरे पर चढ़कर उन्होंने उसे थोड़ा और उठाया। आखिर दरवाजे के नीचे किसी तरह थोड़ी सी जगह बन ही गई, जिसमें से

अपना शरीर दबाकर नकलू निकल पाए। फिर परदे के पीछे की दीवार में एक छेद से रेंगकर वे सब निकले। वहाँ से दीवारों के बीच से होते हुए वे शहतूत परिवार के घर पहुँचे।

"मुझे तुरंत घर जाना है," नकलू बोला, "मेरी चचेरी बहन अथलू शाम को आने वाली है। हो सकता है, वह आ ही पहुँची हो।"

"अभी तो तुम नहीं जा सकते," श्री शहतूत बोले, "मुहल्ले की बिल्ली इस मकान की चौकीदारी पर तैनात है। अंधेरा होने पर पड़ोस का रसोइया उसे बचा खुचा खाना देने के लिए पुकारेगा, तब तक तुम्हें इंतजार करना पड़ेगा।"

"तुम हमारे साथ खाना खाओ," श्रीमती शहतूत बोलीं, "हम लोग आज दाल रोटी खा रहे हैं। बाद में इस घर से निकलने के उपाय दिखलाने के लिए एक नक्शा बनाकर तुम्हें दूँगी।"

"तो मुझे ठहरना ही पड़ेगा," नकलू ने लंबी साँस लेकर कहा।

"जब मैं आपके बच्चों को आँगन में खेलते हुए देखता था, तब से तो वे काफी बदल चुके हैं।" नकलू ने कहा, जब खाना खत्म हो जाने पर बच्चे सोने जा चुके थे।

"अरे, वो तो दूसरे बच्चे थे," श्रीमती शहतूत बोलीं, "ये तो बाद के बच्चे हैं, वो बच्चे तो बड़े होकर चले भी गए।"

उन्होंने एक लंबी साँस ली और फिर बोलीं,

"जज्जू और अज्जू ऊपर रहते हैं। असलू मैदान में रहने चली गई। बन्नू की शादी हो गई। और शालू, हन्नू और बिट्टू ...! नहीं, नहीं! अज्जू की शादी हुई और बन्नू मैदान में रहने चला गया–पर शालू, हन्नू और बिट्टू कहाँ **गए** ?"

"बिल्ली के पेट में, और कहाँ?" उदास श्री शहतूत बोले।

नकलू सोचता रहा कि श्रीमती शहतूत ने कहीं श्री शहतूत की बात सुन न ली हो। उनके चेहरे पर एक हल्की मुस्कान थी, जैसे उन्हें कोई बहुत पुरानी मजेदार बात याद आई हो।

इसलिए नकलू को लगा कि उन्होंने श्री शहतूत की बात नहीं सुनी।

"आपके बच्चे **अब भी** बहुत सुंदर हैं," नकलू ने नर्म आवाज में कहा। (हालाँकि उसने मन ही मन सोचा कि उन्हें ढंग से दाल रोटी खाना नहीं आता।)

फिर नकलू ने शहतूत दंपति को बतलाया कि कैसे वह उस बहुत बूढ़े आदमी के जाल में फँसा और उसके पहले वह कैसे राह भूल गया था, पुल से गिर पड़ा था, उसके पैर की उँगली कट गई थी और कैसे शहद बर्बाद हुआ।

"बड़ी मुसीबतों भरा दिन गुजरा तुम्हारा।" श्रीमती शहतूत बोलीं।

"बिल्कुल!" नकलू ने रोते हुए कहा।

"भाई नकलू!" श्री शहतूत कोमल स्वर में बोले, "तुम्हारे उदास चेहरे से मुझे लग रहा है कि तुम्हें दर्शनशास्त्र पढ़ना चाहिए। मैं जब पुस्तकालय में रहता था तो **मैं** दर्शनशास्त्र पढ़ा करता था।"

"और तभी तुम इतने दुबले हो गए। वहाँ खाने को बहुत कम टुकड़े मिलते थे।" श्रीमती शहतूत बोलीं।



"जरा चुप भी रहो," श्री शहतूत बोले, "मैं कहीं भूल न जाऊँ कि नकलू को शांत करने के लिए मुझे कौन से शब्द बोलने हैं। तो नकलू, तुमने जिन विपदाओं का जिक्र किया–ये छोटी छोटी बातें हैं। मैं **दावे से** कह सकता हूँ कि कल तुम इन्हें भूल जाओगे। पर मान लो! मान लो कि किसी **बिल्ली** ने तुम्हारा **पीछा** किया होता, तो!!"

इससे पहले कि नकलू जवाब दे, श्री

शहतूत उछल पड़े और चीख कर बोले,

"एक बार मेरे पीछे एक बिल्ली पड़ गई थी!"

"और उस बिल्ली ने इनकी दुम का सिरा काट लिया," श्रीमती शहतूत नक्शा बनाती हुई आँखें उठाकर बोलीं।

"दो बाद उसने मुझ पर अपने पंजे गड़ाए।" सिर से पैर तक काँपते हुए श्री शहतूत बोले, "उसने मुझे उछालकर हवा में फेंका। यह तो मेरी किस्मत थी कि मैं जिंदा बच निकला।"

जब अंधेरा हो गया। नकलू ने शहतूत दंपति को धन्यवाद कहा और श्रीमती शहतूत के खींचे नक्शे को लेकर वह मकान के बाहरी आँगन के पास एक छेद तक पहुँचा। जैसा श्री शहतूत ने सुझाया था, नकलू वहाँ तब तक खड़ा इंतजार करता रहा, जब तक उसे रसोइए की बिल्ली को पुकारने की आवाज सुनाई न पड़ी।

"आ जा म्याऊँ म्याऊँ- आ जा, आ जा म्याऊँ म्याऊँ मि आं ऽ ऽ ऊँ . ."

वह आँगन के इस पार से उस पार तेजी से दौड़ा।

पर हाय, उस शाम बिल्ली को बचे खुचे भोजन की तलाश न थी, या उसे शायद पास ही से कहीं से अधिक बढ़िया खुराक की महक आ रही थी।

अचानक ही नकलू को लगा–**एक बिल्ली की खौफनाक बू** कहीं से आ रही थी। वह मुड़ा और मुड़ते ही उसे बिल्ली की चमकती आँखें दिखीं।



नकलू हवा में उछला, बिल्ली उसके पीछे उछली।

नकलू ने जिंदगी भर ऐसी दौड़ न दौड़ी थी। बिल्ली पीछे पीछे ही थी।

वह दौड़ा–दौड़ता रहा–लंबी घासों के बीच,

कंटीली झाड़ियों में और पथरीली मिट्टी पर। बिल्ली अब और भी करीब आ चुकी थी।

तब नकलू को याद आया–**आसपास कहीं बूढ़े मेढ़क का घर था।** बूढ़ा मेढ़क छुछुंदरों की बनाई एक पुरानी सुरंग की गहराई में कहीं रहता था। क्या वह वहाँ तक पहुँच पाएगा? इसके लिए उसे एक ऐसी खुली जगह पार करनी थी, जहाँ बिल्कुल घास नहीं, कोई झाड़ी नहीं और मिट्टी पर ऐसे कोई पत्थर नहीं, जिनके बीच में से वह छिपकर भाग सके।

वह उस खुली जगह में दौड़ निकला।

"अब तुझे पकड़ लिया," बिल्ली चीखी।

पर नकलू टेढ़े मेढ़े आगे पीछे दौड़ता रहा। फिर वह उछल कर गड्ढे में गिरा। सुरंग में तेजी से वह दौड़ा। सुरंग के मुँह पर बिल्ली के पंजों की खुरच उसके कानों तक पहुँची। उसे पता था कि बिल्ली सुरंग में नहीं आ सकती, पर वह फिर भी दौड़ता रहा, दौड़ता रहा।

"मेढ़क! मेढ़क!" दरवाजे पर दस्तक देते हुए नकलू चीखा। नकलू इसके पहले कई बार मेढ़क के यहाँ आया था। उसे मालूम था कि मेढ़क ने सुरंग से निकलने के कई रास्ते बना रखे हैं और कोई न कोई सुरक्षित तरीका वह बतला देगा।

काफी देर के बाद बूढ़े मेढ़क ने द्रवाजा जरा सा खोला और झाँक कर देखा। "नकलू!" वह चीखा,"तुम इस तरह काँप क्यों रहे हो? क्यों भाई? क्या हुआ?" उसने नकलू को अंदर खींचा।

नकलू एक कुर्सी पर गिर पड़ा।

"मैं एक बिल्ली से बचकर भागा हूँ!" नकलू चीखा, अरे बाप रे! इतना बुरा दिन बीता आज!"

बूढ़े मेढ़क ने गर्म चाय बनाई। चाय पीते हुए नकलू ने बूढ़े मेढ़क को बताया कि किस तरह बिल्ली ने उसका पीछा किया, कैसे वह एक जाल में फँसा, कैसे राह भटक गया, पुल से गिरा, कैसे उसकी पैर की उँगली कटी और शहद कैसे बर्बाद हुआ।



"हाँ भई। सचमुच।" बूढ़ा मेढ़क बोला और लंबे समय तक सिर हिलाता रहा। आखिर उसने कहा, "पर नकलू, तुमने अपनी जितनी मुसीबतों का जिक्र किया – इनमें से कोई भी इतनी बुरी नहीं जितना कि सपने होते हैं। अरे भाई, मुझे तो सपनों की बीमारी है।"

"मतलब?" नकलू चीखा।

"देखो, यहाँ सभी बत्तियाँ जल रही हैं। देखा न?" बूढ़ा मेढ़क बोला, "मैं सारी रात बत्तियाँ जला रखता हूँ, फिर भी मुझे डरावने सपने आते हैं। हर किस्म के प्राणी मेरे सपनों में आते हैं-सिर्फ बिल्लियाँ नहीं।"

"कभी कभी मेरे सपनों में बर्फीले तूफान आते हैं, कभी आग, कभी घड़ियाल," उसने उदास स्वर में कहा।

"पर सपने तो सच नहीं होते।" नकलू ने गुस्से में कहा।

"मालूम है, **मालूम है।**" बूढ़ा मेढ़क बोला, "मैं **खुद से** यही कहता रहता हूँ। फिर भी मुझे उनसे डर लगता है।"

"खैर, काफी रात हो गई ···," नकलू बोला।

"अब सोना चाहिए," लंबी साँस लेते हुए बूढ़ा मेढ़क बोला, "तुम अपने साथ कोई बाजा

ले आए हो क्या? अगर लाए हो तो बजा कर सुनाओ। सोने से पहले संगीत सुनने पर मुझे सपने कम आते हैं।"

"माफ करना, मैं कोई बाजा नहीं लाया," नकलू बोला, "पर चूँकि मुझे घर तो जाना है, तुम अपने आप ही कोई गीत गाओ। अपने बोल बनाओ और गाओ। साथ में बीच में **ऊं हूँ, ऊं-हूँ, ऊं-हूँ** गाते रहना। मैंने सुना है कि मेढ़कों की आवाज मधुर होती है।"

"सुझाव के लिए धन्यवाद," बूढ़ा मेढ़क बोला, "तुमने अच्छी सलाह दी है। आज रात में कोशिश करता हूँ। पहले तुम्हें यहाँ से निकलने का सुरक्षित तरीका दिखा दूँ।"

नकलू ने बूढ़े मेढ़क से विदा ली। फिर बिना किसी नई दुर्घटना के वह घर पहुँचा।

उसने बत्ती जलाई। अथलू बहन के पहुँचने का कोई चिन्ह मौजूद न था - कोई चिट्ठी तक न थी। घड़ी की सुइयाँ समय बतला रही थीं।

"नौ बज गए!" नकलू चीखा, "मैं कम से कम पाँच घंटे देर से लौटा हूँ- अब तक तो वह घर वापस चली गई होगी!"



उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने सोचा, "मैं तुरंत उसे एक खत लिखूँगा, जिसमें यह समझाऊँगा कि दोपहर को मैं यहाँ क्यों न था।" वह लिखने के लिए अपने डेस्क पर बैठा।

उसे बहुत ही थकान महसूस हो रही थी। उसे बहुत



सारे शब्द लिखने थे।

कौन सी घटना पहले हुई और कौन सी बाद में?

उसकी आँखें भारी हो आईं।

"प्रिय" लिख सकने के पहले ही उसे नींद आ गई।

फिर उसने एक सपना देखा। उसका सपना ऐसा था।

रसोई की खिड़की से एक बिल्ली उछलकर अंदर आई। बिल्ली ने उसे पकड़ा और एक धागे से कई बार लपेट कर उसे कुर्सी से बाँध दिया। उसने फर्श पर शहद का समुद्र बहा दिया। उसे शहद में डुबोकर वह फिसफिसाई, **"अब तू कभी नहीं भाग पाएगा।"**

उसे दस्तकों की भारी आवाज सुनाई पड़ी – **धाड़ धाड़ धाड़**

"शिकारी आ गए!" बिल्ली चीखी। वह डरी सी दिख रही थी। वह खिड़की से बाहर कूदी और भाग गई।

उसने देखा कि दूर एक मैदान में बिल्ली शहतूत परिवार के सातों बच्चों का पीछा कर रही थी। धीरे धीरे वे घास-फूलों के गुब्बारे बन कर हौले हौले नीले आसमान में ऊपर नीचे उड़ने लगे।

उसे पानी का वह सोता दिखलाई पड़ा जहाँ सुबह उसने मछलियाँ पकड़ी थीं। अब वह पहले से लाखों गुना चौड़ा एक दरिया बन चुका था और उसके चारों ओर धूप कूद रही

थी–सुबह सुबह की सफेद धूप। धूप इतनी खुश नजर आ रही थी, उसके मन में जिंदगी भर धूप देखते रहने की चाह उठी।

ठक ठक ठक।

उसे याद आया कि रात हो चुकी थी और वह अभी भी रसोई में अपनी कुर्सी से बँधा था और बिल्ली ने कहा था, **"तू कभी नहीं भाग पाएगा।"**

ठक ठक ठक।



दस्तक की आवाज सुनकर वह दरवाजे तक जाना चाहता था। पर आखिर वह जाए कैसे? वह तो कुर्सी से बँधा था! अगर किसी तरह हिल डुल कर वह बंधन से **निकल भी** जाए, फिर भी वह कैसे जाए–फर्श पर पैर रखते ही तो शहद में उसके पैर चिपक जाएँगे!

ठक ठक ठक।

नकलू उठा।

"मैंने सचमुच दस्तकों की आवाज सुनी," वह चीखा, "और मैं बँधा **भी नहीं** हूँ। फर्श पर शहद भी **नहीं** है।"

अथलू बहन तेजी से कमरे में घुसी।

"ओ नकलू भाई!" वह चीखी, "तुम सो गए होगे। मैंने दस्तक दी, खिड़की पर भी हाथ मारे और बार बार दस्तक दी। फिर मुझे याद आया कि एक बार तुमने चाभी छिपा कर रखने की जगह दिखलाई थी -वहाँ से मैंने चाभी ली और-"

"तुम आ गई! तुम आ गई! तुम आ गई!" नकलू खुशी से फूला न समा रहा था।

"मुझसे 3 बजे की नाव छूट गई," गले मिलने और थोड़ी देर झूम झूम कर नाचने के बाद अथलू बहन ने समझाया, "सात बजे तक और कोई नाव न थी। और अब मुझे बड़ी

भूख लगी है।"

नकलू को भी अचानक भूख लग आई। उसने आलमारी खोलकर अथलू बहन को पिकनिक के लिए तैयार भोजन दिखलाया।

"ओह, कितना बढ़िया खाना है! और इतना सारा!" अथलू बहन चिल्लाई।

तो आखिर नकलू और अथलू ने पिकनिक मनाई, हालाँकि वे पानी के सोते तक न जा पाए। उन्होंने रसोई में ही टेबल पर ही भोजन किया–खिड़की पर उस वक्त चाँदनी थी।

बाद में अलाव के पास ऊँची कुर्सियों पर बैठ नकलू ने अथलू बहन को दिन भर की करतूतों के बारे में बतलाया। किसी वजह से वे कहानी के गलत हिस्सों पर भी हँसते रहे कि किस तरह नकलू ने सपना देखा, बिल्ली ने उसका पीछा किया, कैसे जाल में फँसा, कैसे राह भूल गया, कैसे पुल से गिरा, कैसे पैर की उँगली कटी और शहद कैसे बर्बाद हुआ।



